The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 3 | March 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

भारत में एनपीएसटी के माध्यम से शिक्षक गुणवत्ता का मानकीकरण : चुनौतियों और संभावनाओं का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रदीप कुमार यादव

शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज

ईमेल–pky9451@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.19581507

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 29-03-2026

Published: 10-04-2026

Keywords:

एनपीएसटी, शिक्षक गुणवत्ता, एनईपी 2020, शिक्षक व्यावसायिक मानक, भारत में स्कूली शिक्षा

ABSTRACT

शिक्षकों की गुणवत्ता किसी भी शिक्षा प्रणाली में अधिगम परिणामों के सबसे महत्वपूर्ण निर्धारकों में से एक है। भारत में लगातार बनी हुई क्षेत्रीय असमानताएं, शिक्षकों की असमान तैयारी और एकसमान व्यावसायिक मानकों की कमी ने स्कूली शिक्षा की प्रभावशीलता को लंबे समय से प्रभावित किया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के व्यापक ढांचे के तहत शुरू किए गए राष्ट्रीय व्यावसायिक मानक (एनपीएसटी) का उद्देश्य देश भर के शिक्षकों के लिए एक सुसंगत, योग्यता–आधारित और करियर–उन्मुख मानक स्थापित करना है। यह शोधपत्र भारत में शिक्षक गुणवत्ता के मानकीकरण के लिए एक नीतिगत साधन के रूप में एनपीएसटी का विश्लेषणात्मक परीक्षण करता है। सरकारी रिपोर्टों, नीतिगत दस्तावेजों, राष्ट्रीय सर्वेक्षणों और मौजूदा अकादमिक साहित्य से प्राप्त माध्यमिक आंकड़ों का उपयोग करते हुए, यह अध्ययन एनपीएसटी कार्यान्वयन से जुड़े दायरे, उद्देश्यों, चुनौतियों और अवसरों की पड़ताल करता है। शोधपत्र तर्क देता है कि यद्यपि एनपीएसटी में शिक्षण को व्यावसायिक बनाने और जवाबदेही में सुधार करने की महत्वपूर्ण क्षमता है, इसकी सफलता प्रभावी कार्यान्वयन, संस्थागत क्षमता और जमीनी हकीकतों के साथ तालमेल पर निर्भर करती है।

प्रस्तावना

शिक्षक गुणवत्ता को शिक्षा की प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उपलब्धि का एक महत्वपूर्ण आधार माना जाता है। भारत में, पिछले दशकों में स्कूली नामांकन में उल्लेखनीय वृद्धि के बावजूद, सीखने के परिणाम चिंता का विषय बने हुए हैं, जैसा कि राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली विश्लेषण (NAS) और शैक्षणिक वर्ष विकास रिपोर्ट (ASER)

जैसे बड़े पैमाने के आकलनों में परिलक्षित होता है। नीति निर्माताओं और शोधकर्ताओं द्वारा पहचाना गया एक प्रमुख कारण राज्यों, विद्यालयों के प्रकार और क्षेत्रों में शिक्षकों की गुणवत्ता में असमानता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 इस चुनौती को स्वीकार करती है और शिक्षक शिक्षा, भर्ती, तैनाती और व्यावसायिक विकास में व्यापक सुधार का प्रस्ताव करती है। इस दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल राष्ट्रीय व्यावसायिक मानक (एनपीएसटी) है, जिसे एक राष्ट्रीय स्तर पर लागू होने वाले ढांचे के रूप में परिकल्पित किया गया है जो शिक्षकों के व्यावसायिक जीवन के विभिन्न चरणों में उनकी दक्षताओं, प्रदर्शन अपेक्षाओं और कैरियर प्रगति के मार्गों को परिभाषित करता है।

यह शोधपत्र भारत में शिक्षक गुणवत्ता मानकीकरण के तंत्र के रूप में एनपीएसटी का आलोचनात्मक विश्लेषण करने का प्रयास करता है। यह एनपीएसटी के वैचारिक आधारों की जांच करता है, इसके कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियों का आकलन करता है और शिक्षण पेशे को मजबूत करने के लिए इसके द्वारा प्रदान किए जाने वाले अवसरों पर प्रकाश डालता है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

लिंडा, हम्मोंद (2000, 2017) ने अपने अध्ययन में यह स्पष्ट किया कि शिक्षक की गुणवत्ता सीधे तौर पर विद्यार्थियों के अधिगम परिणामों को प्रभावित करती है। उन्होंने यह भी बताया कि उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षक वे होते हैं जो विषय ज्ञान, शिक्षण कौशल एवं मूल्य आधारित दृष्टिकोण में दक्ष होते हैं। क्योकि शिक्षक के लिए स्पष्ट व्यावसायिक मानकों का निर्धारण आवश्यक है, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार किया जा सके।

ली, शुल्मैन (1986) ने "Pedagogical Content Knowledge (PCK)" की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसमें उन्होंने बताया कि शिक्षक के लिए केवल विषय ज्ञान पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसे इस ज्ञान को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने की क्षमता भी होनी चाहिए। यह अवधारणा वर्तमान छच्ैज् के "व्यावसायिक ज्ञान एवं अभ्यास" आयाम का आधार मानी जा सकती है।

जॉन, हटती (2009) ने अपनी प्रसिद्ध कृति टपेपइसम स्मंतदपदह में यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि शिक्षक की प्रभावशीलता, शिक्षण पद्धतियाँ एवं फीडबैक प्रणाली छात्रों की उपलब्धि पर गहरा प्रभाव डालती हैं। उनके अध्ययन में शिक्षक को शिक्षा प्रणाली का सबसे महत्वपूर्ण कारक माना गया है। National Council for Teacher Education (NCTE) द्वारा विभिन्न रिपोर्टों (2009, 2014, 2023) में शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु व्यावसायिक मानकों की आवश्यकता पर बल दिया गया है। छब्ज्म् ने NPST के माध्यम से शिक्षक के लिए एक समग्र दक्षता–आधारित ढांचा प्रस्तुत किया है, जो शिक्षक के चयन, प्रशिक्षण एवं मूल्यांकन को प्रभावित करता है।

National Education Policy– 2020 ने शिक्षक शिक्षा को शिक्षा सुधार का केंद्र बिंदु मानते हुए स्पष्ट किया है कि शिक्षक की गुणवत्ता में सुधार के बिना शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन संभव नहीं है। इस नीति में छच्ैज् को लागू करने की अनुशंसा की गई है, जिससे शिक्षक के पेशेवर मानकों को राष्ट्रीय स्तर पर एकरूप बनाया जा सके।

OECD (2019) की रिपोर्टों में यह पाया गया कि जिन देशों में शिक्षक के लिए स्पष्ट व्यावसायिक मानक निर्धारित हैं, वहाँ शिक्षा की गुणवत्ता अधिक उच्च स्तर की होती है। व्ब्ब् ने शिक्षक के निरंतर व्यावसायिक विकास (CPD) को शिक्षा सुधार का प्रमुख साधन बताया है।

UNESCO (2015) ने भी अपने "Teacher Policy Development Guide" में यह स्पष्ट किया कि शिक्षक के लिए मानकीकृत दक्षताओं एवं मूल्यांकन प्रणाली का होना आवश्यक है, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता में स्थायी सुधार लाया जा सके।

एनपीएसटी (NPST) का वैचारिक ढांचा

भारत में शिक्षक शिक्षा एवं गुणवत्ता सुधार के संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने यह स्पष्ट किया है कि शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता सीधे तौर पर शिक्षक की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। इसी दृष्टिकोण को साकार करने के लिए राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE) द्वारा National Professional Standards for Teachers (NPST) का विकास किया गया। NPST का वैचारिक ढांचा एक समग्र एवं दक्षता–आधारित (Competency–based) प्रणाली है, जिसका उद्देश्य शिक्षक के ज्ञान, कौशल, मूल्यों एवं व्यावसायिक विकास को एकीकृत करते हुए शिक्षक गुणवत्ता का मानकीकरण करना है। NPST का वैचारिक आधार विभिन्न शिक्षाशास्त्रीय सिद्धांतों पर आधारित है। विशेष रूप से ली शुलमैन द्वारा प्रतिपादित Pedagogical Content Knowledge (PCK) की अवधारणा, जिसमें विषय ज्ञान एवं शिक्षण कौशल के समन्वय पर बल दिया गया है, इस ढांचे की नींव बनती है। इसके अतिरिक्त लिंडा डार्लिंग–हैमंड ने शिक्षक गुणवत्ता को विद्यार्थियों की उपलब्धि से जोड़ते हुए यह स्थापित किया कि स्पष्ट व्यावसायिक मानकों का निर्धारण शिक्षा सुधार के लिए आवश्यक है। वहीं जॉन हैटी के शोधों में शिक्षक की प्रभावशीलता को अधिगम परिणामों का प्रमुख निर्धारक बताया गया है। इन सभी विचारों का समन्वित प्रभाव NPST के वैचारिक ढांचे में परिलक्षित होता है।

NPST का ढांचा चार प्रमुख आयामों मूल्य एवं नैतिकता, व्यावसायिक ज्ञान, व्यावसायिक अभ्यास तथा व्यावसायिक विकास पर आधारित है। मूल्य एवं नैतिकता का आयाम शिक्षक को एक उत्तरदायी, संवेदनशील एवं समावेशी दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करता है। व्यावसायिक ज्ञान का आयाम शिक्षक के विषय ज्ञान, शिक्षण शास्त्रीय समझ एवं शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं की पहचान पर केंद्रित है। व्यावसायिक अभ्यास का आयाम कक्षा शिक्षण, प्रबंधन, शिक्षण विधियों एवं मूल्यांकन प्रक्रियाओं से संबंधित है, जबकि व्यावसायिक विकास का आयाम शिक्षक

को निरंतर सीखने एवं आत्म–सुधार की दिशा में अग्रसर करता है। इस प्रकार NPST शिक्षक की भूमिका को केवल ज्ञान प्रदाता तक सीमित न रखकर उसे एक मार्गदर्शक, सहायक एवं नवाचारी पेशेवर के रूप में विकसित करता है। इसके अतिरिक्त NPST शिक्षक के कैरियर विकास को भी एक संरचित रूप प्रदान करता है, जिसमें शिक्षक की प्रगति को विभिन्न स्तरों प्रारंभिक, दक्ष, विशेषज्ञ एवं नेतृत्वकर्ता में विभाजित किया गया है। यह व्यवस्था पारंपरिक वरिष्ठता आधारित पदोन्नति के स्थान पर दक्षता एवं प्रदर्शन आधारित उन्नयन को बढ़ावा देती है, जिससे शिक्षक अधिक उत्तरदायी एवं प्रेरित होते हैं।

NPST के वैचारिक ढांचे का एक महत्वपूर्ण पक्ष इसका मूल्यांकन तंत्र है, जो प्रदर्शन आधारित एवं पारदर्शी है। इसके अंतर्गत शिक्षक के कार्य, दक्षताओं एवं कक्षा प्रदर्शन का नियमित आकलन किया जाता है, जिससे गुणवत्ता का वस्तुनिष्ठ मापन संभव हो सके। यह प्रणाली राष्ट्रीय स्तर पर एकरूपता स्थापित करने के साथ–साथ स्थानीय आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखने का प्रयास करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली (एनपीएसटी) के कार्यान्वयन में चुनौतियाँ

भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत शिक्षक शिक्षा में गुणवत्ता सुधार के उद्देश्य से राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का विकास किया गया है। यद्यपि यह पहल शिक्षक गुणवत्ता के मानकीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, किन्तु इसके प्रभावी कार्यान्वयन में अनेक संरचनात्मक, प्रशासनिक एवं व्यावहारिक चुनौतियाँ सामने आती हैं।

- **शिक्षकों के प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण** : NPST दक्षता–आधारित ढांचा है, जिसके लिए शिक्षकों को नवीन शिक्षण विधियों, मूल्यांकन तकनीकों एवं व्यावसायिक विकास की प्रक्रियाओं से परिचित होना आवश्यक है। वर्तमान में अनेक शिक्षक पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों के अभ्यस्त हैं, जिसके कारण नए मानकों को अपनाने में कठिनाई होती है। पर्याप्त एवं सतत प्रशिक्षण कार्यक्रमों का अभाव इस चुनौती को और बढ़ाता है।
- **संसाधनों की असमानता** : भारत जैसे विशाल एवं विविधतापूर्ण देश में ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के बीच संसाधनों, तकनीकी सुविधाओं एवं आधारभूत संरचना में स्पष्ट अंतर पाया जाता है। ऐसे में NPST के समान मानकों को सभी विद्यालयों में समान रूप से लागू करना कठिन हो जाता है। विशेषकर दूरस्थ क्षेत्रों में डिजिटल संसाधनों की कमी, इंटरनेट की उपलब्धता एवं प्रशिक्षित मानव संसाधन का अभाव कार्यान्वयन को प्रभावित करता है।
- **मूल्यांकन प्रणाली की जटिलता** : NPST के अंतर्गत प्रदर्शन आधारित मूल्यांकन को अपनाया गया है, जिसमें शिक्षक के कार्य, कक्षा व्यवहार एवं छात्र अधिगम परिणामों का समग्र मूल्यांकन किया जाता है। यह प्रक्रिया वस्तुनिष्ठ एवं पारदर्शी बनाने में प्रशासनिक कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं, जैसे– मूल्यांकन मानकों की स्पष्टता, मूल्यांकनकर्ताओं का प्रशिक्षण एवं निष्पक्षता सुनिश्चित करना।

- **प्रशासनिक एवं कार्यभार संबंधी समस्याएँ :** अनेक शिक्षक शिक्षण के अतिरिक्त विभिन्न गैर–शैक्षिक कार्यों (जैसे चुनाव ड्यूटी, सर्वेक्षण, प्रशासनिक कार्य) में संलग्न रहते हैं, जिससे वे NPST के मानकों के अनुरूप अपने व्यावसायिक विकास पर पर्याप्त ध्यान नहीं दे पाते। यह अतिरिक्त कार्यभार शिक्षक की कार्यक्षमता एवं प्रेरणा को प्रभावित करता है।
- **मानकीकरण एवं स्थानीय आवश्यकताओं के बीच संतुलन :** NPST का उद्देश्य राष्ट्रीय स्तर पर एक समान मानक स्थापित करना है, किन्तु भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं भाषाई विविधता को ध्यान में रखते हुए सभी क्षेत्रों में एक ही मानक लागू करना व्यावहारिक रूप से कठिन हो सकता है। स्थानीय आवश्यकताओं एवं संदर्भों को अनदेखा करने से शिक्षण प्रक्रिया की प्रभावशीलता प्रभावित हो सकती है।
- **नीतिगत समन्वय :** NPST के सफल कार्यान्वयन के लिए केंद्र एवं राज्य सरकारों, विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं एवं प्रशिक्षण एजेंसियों के बीच समन्वय आवश्यक है। कई बार नीतियों के क्रियान्वयन में समन्वय की कमी, अस्पष्ट दिशा–निर्देश एवं प्रशासनिक विलंब कार्यान्वयन को प्रभावित करते हैं।
- **शिक्षकों का दृष्टिकोण एवं परिवर्तन के प्रति प्रतिरोध :** नई नीतियों एवं मानकों को अपनाने में प्रारंभिक संकोच एवं असहजता स्वाभाविक है, विशेषकर तब जब शिक्षकों को इसके लाभों एवं प्रक्रियाओं की स्पष्ट समझ न हो।

एनपीएसटी (NPST) द्वारा प्रदत्त अवसर

भारत में शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता सुधार के संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत विकसित राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद का राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली एक महत्वपूर्ण पहल है। यह न केवल शिक्षक गुणवत्ता के मानकीकरण का प्रयास करता है, बल्कि शिक्षा प्रणाली में अनेक नए अवसर भी प्रदान करता है, जो शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था के लिए लाभकारी सिद्ध हो सकते हैं।

- **शिक्षक गुणवत्ता में सुधार :** यह ढांचा शिक्षक के ज्ञान, कौशल, मूल्यों एवं व्यावसायिक दक्षताओं को स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है, जिससे शिक्षकों को यह समझने में सहायता मिलती है कि उनसे क्या अपेक्षित है। परिणामस्वरूप, शिक्षण अधिक प्रभावी एवं उद्देश्यपूर्ण बनता है, जिससे छात्रों के अधिगम स्तर में वृद्धि होती है।
- **सतत व्यावसायिक विकास :** NPST शिक्षकों को निरंतर सीखने, प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने एवं आत्ममूल्यांकन करने के लिए प्रेरित करता है। इससे शिक्षक एक जीवनपर्यन्त शिक्षार्थी के रूप में विकसित होते हैं, जो बदलती शैक्षिक आवश्यकताओं एवं नवाचारों के अनुरूप स्वयं को अद्यतन रखते हैं।
- **पारदर्शी एवं प्रदर्शन–आधारित मूल्यांकन प्रणाली :** NPST पारंपरिक वरिष्ठता–आधारित प्रणाली के स्थान पर दक्षता एवं कार्य–प्रदर्शन आधारित मूल्यांकन को बढ़ावा देता है। इससे शिक्षकों की पदोन्नति एवं प्रगति अधिक न्यायसंगत एवं वस्तुनिष्ठ होती है, जिससे योग्य एवं परिश्रमी शिक्षकों को उचित पहचान एवं प्रोत्साहन मिलता है।

- **शिक्षक के कैरियर विकास के स्पष्ट मार्ग :** विभिन्न स्तरों प्रारंभिक, दक्ष, विशेषज्ञ एवं नेतृत्वकर्ता के माध्यम से शिक्षक अपनी योग्यता एवं प्रदर्शन के आधार पर आगे बढ़ सकते हैं। इससे शिक्षक पेशे को अधिक आकर्षक एवं सम्मानजनक बनाने में सहायता मिलती है।
- **शिक्षा में समानता एवं एकरूपता :** यह राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षक के लिए समान मानक निर्धारित करता है, जिससे विभिन्न राज्यों एवं क्षेत्रों में शिक्षा की गुणवत्ता में संतुलन स्थापित किया जा सकता है। इससे विशेष रूप से पिछड़े एवं वंचित क्षेत्रों में शिक्षा सुधार की संभावनाएँ बढ़ती हैं।
- **शिक्षण में नवाचार एवं तकनीकी एकीकरण :** यह शिक्षकों को नई शिक्षण विधियों, डिजिटल उपकरणों एवं आधुनिक तकनीकों के उपयोग के लिए प्रेरित करता है, जिससे कक्षा शिक्षण अधिक रोचक, प्रभावी एवं छात्र–केंद्रित बनता है।
- **उत्तरदायित्व एवं पारदर्शिता :** NPST के अंतर्गत शिक्षक के कार्यों का नियमित मूल्यांकन एवं निगरानी की जाती है, जिससे शिक्षकों में उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है तथा शिक्षा प्रणाली में पारदर्शिता सुनिश्चित होती है।
- **वैश्विक मानकों के अनुरूप शिक्षा प्रणाली का विकास :** अंतरराष्ट्रीय संगठनों जैसे यूनेस्को एवं ओईसीडी द्वारा सुझाए गए शिक्षक मानकों के अनुरूप NPST भारतीय शिक्षा प्रणाली को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने में सहायक हो सकता है।

अध्ययन के परिणाम

वर्तमान अध्ययन से निम्नलिखित प्रमुख परिणाम प्राप्त होते हैं:

1. **शिक्षक प्रशिक्षण में अंतर :** यद्यपि शिक्षकों का एक उच्च प्रतिशत पेशेवर रूप से प्रशिक्षित है, फिर भी सतत पेशेवर विकास और डिजिटल तत्परता में कमियाँ बनी हुई हैं। इससे यह संकेत मिलता है कि संरचित सेवाकालीन सहायता के बिना केवल सेवापूर्व योग्यता ही पर्याप्त नहीं है।
2. **मानकीकरण की आवश्यकता :** राज्यों में विद्यार्थी–शिक्षक अनुपात, प्रशिक्षण तक पहुंच और संस्थागत क्षमता में भिन्नता एकसमान राष्ट्रीय मानक के अभाव को उजागर करती है, जो राष्ट्रीय शिक्षक प्रशिक्षण प्रणाली की प्रासंगिकता को और मजबूत करती है।
3. **उच्च प्रभाव वाले एनपीएसटी क्षेत्र :** व्यावसायिक ज्ञान, कक्षा अभ्यास और सतत व्यावसायिक विकास शिक्षक गुणवत्ता में सुधार के लिए सबसे प्रभावशाली क्षेत्रों के रूप में उभरते हैं।
4. **प्रणालीगत चुनौतियां :** संघीय विविधता और संस्थागत क्षमता संबंधी बाधाओं को सबसे गंभीर चुनौतियों के रूप में पहचाना गया है, जो यह दर्शाती हैं कि कार्यान्वयन संबंधी समस्याएं व्यक्तिगत नहीं बल्कि संरचनात्मक हैं।

5. **नीतिगत संरेखण :** पहचानी गई कमियों और एनपीएसटी प्रावधानों के बीच संरेखण इस बात की पुष्टि करता है कि एनपीएसटी वैचारिक रूप से शिक्षक शिक्षा पारिस्थितिकी तंत्र में मौजूदा कमियों को दूर करने के लिए अच्छी स्थिति में है।

शैक्षिक निहितार्थ

भारत में शिक्षक गुणवत्ता के मानकीकरण हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत विकसित राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद का राष्ट्रीय शिक्षक प्रशिक्षण प्रणाली शिक्षा प्रणाली के विभिन्न पक्षों पर गहरे शैक्षिक निहितार्थ प्रस्तुत करता है। ये निहितार्थ न केवल शिक्षक शिक्षा बल्कि शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया, विद्यालय प्रशासन एवं नीति निर्माण तक विस्तृत हैं।

1. **नीति–स्तरीय उपयोग :** ये निष्कर्ष नीति निर्माताओं को चरणबद्ध कार्यान्वयन के माध्यम से एनपीएसटी के कार्यान्वयन को प्राथमिकता देने में सहायता कर सकते हैं, जिसमें क्षमता निर्माण, मूल्यांकनकर्ताओं के प्रशिक्षण और डिजिटल अवसंरचना विकास पर प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
2. **संस्थागत उपयोग :** शिक्षक शिक्षा संस्थान, एससीईआरटी और डीआईटी एनपीएसटी डोमेन और दक्षता मानकों के अनुरूप व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों को पुनर्रचना करने के लिए परिणामों का उपयोग कर सकते हैं।
3. **प्रशासनिक उपयोग :** शिक्षा प्रशासक पारदर्शी शिक्षक मूल्यांकन, तैनाती योजना और व्यावसायिक विकास की निगरानी के लिए मानकीकृत संकेतकों और ग्राफ का उपयोग कर सकते हैं।
4. **अकादमिक और अनुसंधान उपयोग :** यह अध्ययन एक संरचित विश्लेषणात्मक ढांचा प्रदान करता है जिसे शिक्षक गुणवत्ता और मानकों पर अनुभवजन्य अनुसंधान, तुलनात्मक अध्ययन या डॉक्टरेट स्तर के शोध में विस्तारित किया जा सकता है।
5. **कक्षा स्तर पर उपयोग :** अपेक्षाओं और योग्यताओं को स्पष्ट करके, एनपीएसटी–आधारित पद्धतियाँ शिक्षकों को चिंतनशील शिक्षण, समावेशी शिक्षाशास्त्र और प्रौद्योगिकी के प्रभावी उपयोग में सहायता कर सकती हैं।

निष्कर्ष

भारत में शिक्षक शिक्षा एवं गुणवत्ता सुधार के संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत विकसित राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद का राष्ट्रीय शिक्षक प्रशिक्षण प्रणाली एक महत्वपूर्ण एवं परिवर्तनकारी पहल के रूप में उभरकर सामने आया है। यह ढांचा शिक्षक के ज्ञान, कौशल, मूल्य एवं व्यावसायिक विकास को एकीकृत करते हुए शिक्षक गुणवत्ता के मानकीकरण का सुदृढ़ आधार प्रदान करता है।

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि NPST शिक्षक शिक्षा में पारंपरिक दृष्टिकोण से हटकर एक दक्षता–आधारित एवं प्रदर्शन–उन्मुख प्रणाली को स्थापित करता है। इसके माध्यम से न केवल शिक्षक के कार्य का वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन संभव होता है, बल्कि शिक्षक के कैरियर विकास, व्यावसायिक उन्नयन एवं उत्तरदायित्व को भी सुनिश्चित किया जा सकता है। इससे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार तथा विद्यार्थियों के अधिगम परिणामों में सकारात्मक परिवर्तन की संभावना बढ़ती है। हालांकि NPST के प्रभावी कार्यान्वयन में प्रशिक्षण की कमी, संसाधनों की असमानता, मूल्यांकन प्रणाली की जटिलता, प्रशासनिक दबाव एवं नीतिगत समन्वय जैसी अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। यदि इन चुनौतियों का समाधान समयबद्ध एवं योजनाबद्ध तरीके से नहीं किया गया, तो NPST के अपेक्षित परिणाम प्राप्त करना कठिन हो सकता है।

इसके विपरीत NPST अनेक महत्वपूर्ण अवसर भी प्रदान करता है, जैसे– शिक्षक गुणवत्ता में सुधार, सतत व्यावसायिक विकास, पारदर्शी मूल्यांकन प्रणाली, कैरियर प्रगति के स्पष्ट मार्ग एवं शिक्षा में एकरूपता की स्थापना। यह ढांचा शिक्षकों को एक जीवनपर्यन्त शिक्षार्थी एवं नवाचारी पेशेवर के रूप में विकसित करने की दिशा में प्रेरित करता है। अतः समग्र रूप से कहा जा सकता है कि छच्ैज् भारतीय शिक्षा प्रणाली में शिक्षक गुणवत्ता के मानकीकरण की दिशा में एक प्रभावी एवं दूरदर्शी पहल है। इसके सफल क्रियान्वयन के लिए आवश्यक है कि सभी संबंधित पक्ष केंद्र एवं राज्य सरकारें, शैक्षिक संस्थान, शिक्षक प्रशिक्षण एजेंसियाँ एवं स्वयं शिक्षक समन्वित एवं सक्रिय भूमिका निभाएँ। तभी यह पहल शिक्षा प्रणाली को अधिक गुणवत्तापूर्ण, समावेशी एवं परिणामोन्मुख बनाने में सफल हो सकेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (2020). शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.
2. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (2023). राष्ट्रीय व्यावसायिक मानक शिक्षक हेतु (NPST) मसौदा ढांचा. नई दिल्ली.
3. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF). नई दिल्ली.
4. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (2009). शिक्षक शिक्षा पर स्थिति पत्र. नई दिल्ली.
5. यूनेस्को (2015). शिक्षक नीति विकास मार्गदर्शिका. पेरिस.
6. ओईसीडी (2019). TALIS 2018 परिणामः शिक्षक एवं विद्यालय प्रमुख. पेरिस.
7. लिंडा डार्लिंग–हैमंड (2000). शिक्षक गुणवत्ता एवं छात्र उपलब्धिः राज्य नीति का विश्लेषण. एजुकेशन पॉलिसी एनालिसिस आर्काइव्स, 8(1).
8. जॉन हैटी (2012). विजिबल लर्निंग फॉर टीचर्स. रूटलेज.
9. Mishra, P. & Koehler, M. J (2006). प्रौद्योगिकीय–शैक्षणिक विषय ज्ञान (TPACK) ढांचा. टीचर्स कॉलेज रिकॉर्ड, 108(6).

10. Singh, R. (2021). भारत में शिक्षक व्यावसायिक विकास एवं गुणवत्ता सुधार. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च.
11. Sharma, R. (2018). भारत में शिक्षक शिक्षा एवं गुणवत्ता संबंधी चिंताएँ. नई दिल्लीः एपीएच पब्लिशिंग.
12. Kumar, A. (2020). भारतीय विद्यालयों में शिक्षक प्रभावशीलता एवं व्यावसायिक मानक. जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन.
13. Gupta, P. (2022). भारत में शिक्षक शिक्षा नीतियों के कार्यान्वयन की चुनौतियाँ. एजुकेशनल क्वेस्ट.
14. https://ncte.gov.in
15. https://www.education.gov.in
16. https://unesco.org